❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

ज्ञान ज्योति महोत्सव
महासम्पर्क अभियान
महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयंती के अवसर पर न्यूनतम 200 महानुभावों से संपर्क करने का संकल्प लीजिए
अपने मोबाइल में एप्प डाउनलोड करें

वर्ष 47, अंक 27 | एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 20 मई, 2024 से रविवार 26 मई, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 | सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 | पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आया युवा चरित्र निर्माण शिविरों का मौसम

शारीरिक, आत्मिक और बौद्धिक विकास के लिए शिविरों में भेजें अपने बच्चों को

आर्य विद्यालयों के अधिकारी भी शिविरों में भाग लेने हेतु विद्यार्थियों को करें प्रेरित

प्रमुख चरित्र निर्माण एवं प्रशिक्षण शिविरों का विवरण

सार्वदेशिक आर्य वीर दल
राष्ट्रीय शिविर
2 से 16 जून, 2024
स्थान : गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद (हरियाणा)
उद्घाटन : 2 जून - सायं 5 बजे
समापन : 16 जून - सायं 4 बजे
सम्पर्क करें- *सत्यवीर आर्य प्रधान संचालक, 9414789461*

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश
चरित्र निर्माण, आत्मरक्षा एवं शाखा संचालन प्रशिक्षण शिविर
22 मई से 1 जून, 2024
स्थान : एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग, नई दिल्ली
उद्घाटन : 26 मई - सायं 5 बजे
समापन : 1 जून - सायं 4 बजे
सम्पर्क करें- *बृहस्पति आर्य, महामन्त्री, 9990232164*

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश
विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर
2 जून से 9 जून, 2024
स्थान : डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर-7, रोहिणी, दिल्ली
उद्घाटन : 3 जून - सायं 5 बजे
समापन : 9 जून- सायं 4 बजे
सम्पर्क करें- श्रीमती विभा आर्या मन्त्राणी, 9873054398

अ.भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ
41वां वैचारिक क्रान्ति शिविर
24 मई से 1 जून, 2024
आर्यसमाज रानीबाग मेन बाजार दिल्ली
समापन : 1 जून, 2024 सायं 4 बजे
स्थान : डॉ. अम्बेडकर इंटरनेशनल सैन्टर, जनपथ, नई दिल्ली
सम्पर्क करें- *जोगेन्द्र खट्टर महामन्त्री, 9810040982*

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल
राष्ट्रीय वीरांगना प्रशिक्षण शिविर
16 से 25 जून, 2024
स्थान : राजकीय कन्या विद्यालय, गंधरा, सांपला, रोहतक (हरि.)
सम्पर्क करें- *श्रीमती मृदुला चौहान संचालिका, 9810702760*

आर्य युवा संस्कार शिविर, पंचकुला
8 से 22 जून (लेवल-1)
7 से 12 जून (लेवल-2)
स्थान सीमित (30 सीट प्रत्येक)
सम्पर्क- *बृहस्पति आर्य 9990232164*

आर्य युवती संस्कार शिविर, पंचकुला
13 से 17 जून (लेवल-1-2)
स्थान सीमित (30 सीट प्रत्येक)
सम्पर्क- *श्रीमती शालिनी गुप्ता, 9810580195*

वर्तमान समय अत्यन्त चुनौतियों से भरा है। अतः अपनी वास्तविक सम्पत्ति सन्तानों को शारीरिक, आत्मिक एवं बौद्धिक स्तर पर संस्कृति और संस्कारों से समुन्नत करने हेतु शिविरों का यह मौसम हर वर्ष आता है। इसलिए बिना समय गवाएं अपने बच्चों को अपने निकटवर्ती शिविरों में अवश्य भेजें। - *विनय आर्य, महामन्त्री*

आर्थिक रूप से कमजोर बारहवीं पास छात्रों के आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृति योजना

आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2024

- पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।
- आयु सीमा: आवदेन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
- छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों का लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
- पात्रता परीक्षा ऑनलाइन वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
- पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान और रिजनिंग पर आधारित होगा।

आवेदन की अंतिम तिथि **15 जुलाई 2024**
ऑनलाइन परीक्षा तिथि 21 जुलाई 2024 11:00 AM IST

आवेदन करने के लिए वेबसाइट **www.aryapragati.com**

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172
E-mail: dss.pratibha@gmail.com

देववाणी-संस्कृत

कहां जाएं

वेद-स्वाध्याय

वयः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः।
अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान्।। ऋग्वेद 10/73/11
ऋषिः **गौरिवीतिः।।** देवता - **इन्द्रः।।** छन्दः **निचृत्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ- वे **सुपर्णाः** = शोभनपतन शील **वयः**= पक्षी **प्रियमेधाः** = जिन्हें मेध (संगमन) प्रिय है और **ऋषयः**=जो ज्ञान लाने वाले हैं **इन्द्रम्**= इन्द्र के पास **नाधमानाः**= यह प्रार्थना करते हुए **उपसेदुः**=आ बैठे हैं कि "**ध्वान्तम्**=हमारे अन्धकार का **अप ऊर्णुहि**= निवारण कर दो; **चक्षुः पूर्धि**= हमारी आँखे भर दो या हमें आँखें दे दो और हम जो **निधया इव**= मानो पाशों। से **बद्धान्**= बँधे पड़े हैं **अस्मान्**= हमें **मुमुग्धि**= छुड़ा दो।"

विनय - हमारे शरीर में पाँच इन्द्रियाँ रहती हैं। ये पक्षियों की तरह बाहर उड़ती-फिरती हैं। ये ऋषि-इन्द्रियाँ हैं, ज्ञान लाने वाली ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। इन्हें अपने रूप-रसादि विषयों से संगमन करना बड़ा प्रिय है। इनका उड़ना (पतन करना) बड़ा सुन्दर है। बाहर से बड़े सुन्दर-सुन्दर रूपों को, रसों को, गन्धों को ये कैसी विलक्षणता से ले-आती है! इनमें क्या ही अद्भुत गुण है। आँख खोलो, तो सब विविध जगत् दीखने लगता है, आँख बन्द करने पर कुछ नहीं। आँख में क्या विलक्षण शक्ति है। इसी प्रकार कान को देखो, जीभ को देखो, इनमें क्या विचित्र जादू है कि वे हमारे लिए बड़ी ही आनन्ददायक अनुभूतियों को उत्पन्न करती हैं।

परन्तु एक समय आता है जब ये इतनी अद्भुत इन्द्रियाँ हमारी ज्ञानपिपासा को तृप्त नहीं कर सकतीं। ये बाहर से जो प्रकाश लाती हैं वह सब तुच्छ लगने लगता है। यह तब होता है जब छठी इन्द्रिय (मन) द्वारा अन्दर के प्रकाश की ओर हमारा ध्यान जाता है, प्रत्याहार शुरू होता है और इन्द्रियों का उड़ना बन्द हो जाता है। सब इन्द्रियाँ मन के प्रकाश के मुकाबले में बैठकर अपने अन्धकार को और अपनी परिमितता के बन्धन को अनुभव करती हैं। ओह! इन्द्रियाँ कितना थोड़ा ज्ञान दे सकती हैं और वह ज्ञान भी कितना बँधा हुआ है। अन्दर-बाहर की थोड़ी-सी बाधा से उनका ज्ञान-ग्रहण रुक जाता है। आँख अतिदूर, अतिसमीप नहीं देख सकती, अतिसूक्ष्म को नहीं देख सकती, ओट में पार नहीं देख सकती। यह अँधेरा और यह बन्धन तब अनुभव होता है जब मनुष्य को अन्दर के महान्, सब-कुछ जान सकने वाले प्रकाश का पता लगता है। यह इन्द्र का, आत्मा का प्रकाश है। इस प्रकाश-पिपासा से व्याकुल होकर इन्द्रियाँ आत्मा से उस प्रकाश को पाने के लिए गिड़गिड़ाने लगती हैं, प्रार्थना करने लगती हैं कि "हमारे अन्धकार का पर्दा उठा दो, हमारी आँखें प्रकाश से भर दो, हम अन्धे हैं, हमें आँखें दे दो, हम अपने-अपने तनिक-से क्षेत्र में बंधी पड़ी हैं, हमें देशकालाव्यवहित दर्शन की शक्ति दे दो, हमारे बन्धन काट दो, हम जिस देश और जिस काल में जिस वस्तु को देखना चाहें तुम्हारे इस प्रकाश में (प्रज्ञालोक में) देख सकें।

इन्द्रियाँ अपने शक्ति-स्रोत इन्द्र की शरण में न जाएँ तो और कहाँ जाएँ?

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय | बढ़ती आबादी-सिकुड़ते ग्लेशियर

जल संघर्ष : क्या अब ये ही भविष्य की जंग है?

.....विश्व बैंक की एक रिपोर्ट में कहा गया है पानी की कमी से विस्थापन होगा और संघर्ष भड़केगा। विश्लेषकों का कहना है कि पानी की बढ़ती कमी हिंसक संघर्ष को बढ़ावा देगी। क्योंकि बेईमान राजनेता, शक्तिशाली निगम और शक्तिहीन लोग कम होती पानी की आपूर्ति के लिए लड़ेंगे। ..... हो सकता है अभी कुछ लोग इस खतरे से इत्तेफाक ना रखें। किन्तु उन्हें सोचना होगा कि आज से तीन दशक पहले किसने सोचा था कि भारत जैसे देश में एक लीटर पीने के पानी की न्यूनतम कीमत 20 रूपये होगी? ..... दुनिया के विभिन्न हिस्सों में संघर्ष जारी है। इज़राइल और फिलिस्तीन, मोज़ाम्बिक और ज़िम्बाब्वे, बोलीविया और चिली के बीच, और तुर्की, सीरिया और इराक के बीच सीरिया में, असल विवाद तेल से अधिक अब नदियों और जल संसाधनों पर कब्जे को लेकर बदल चुके है। वाटर वार जल युद्ध का यह महज अभी एक ट्रेलर है, जैसे-जैसे आबादी बढ़ेगी पानी की मांग बढ़ेगी ऐसे-ऐसे यह जंग गली, मोहल्लों और सोसाइटियों से निकलकर राज्यों और देशों तक की जंग में तब्दील हो जाएगी।.....

सात दिनों से ग्रेटर नोएडा वेस्ट की रक्षा अडेला हाउसिंग सोसाइटी पानी की किल्लत से जूझ रही है। भारत की राजधानी दिल्ली के द्वारका में कई पॉकेट की सोसायटी में रहने वाले हजारों लोग पानी की किल्लत से परेशान हैं। नोएडा के सेक्टर- 77 स्थित एक्सप्रेस जेनिथ सोसायटी में पानी आपूर्ति नहीं होने पर लोगों ने विरोध किया है। गुरुग्राम स्थित कई सोसाइटी भी पानी की किल्लत से गुजर रही है।

इन दिनों देश में चुनाव है। करीब पांच चरण गुजर चुके है। लेकिन स्वच्छ पानी का मुद्दा अभी सुनाई नहीं दिया। कोई देश बेच रहा है, कोई भैंस बेच रहा है, मंगलसूत्र से लेकर मंदिर-मस्जिद के मुद्दे हैं, किन्तु कोई भी राजनितिक दल ये बोलने को तैयार नहीं है कि क्या देश की जनता को पानी मिलेगा या वो प्यासी मरेगी?

आज तालाब, कुएं, नहर वगैरह सूखते जा रहे हैं और नदी का पानी बुरी तरह से दूषित हो गया है। अगर समय रहते सरकारों ने पानी की अहमियत को नहीं समझा तो वो दिन दूर नहीं, जब पूरा देश पानी से संकट से जूझता नजर आएगा। हो सकता है ये स्थिति एक नये टकराव को जन्म ना दे दे और ये जल संकट विश्व जल युद्ध में ना बदल जाये!

कई लोग कह सकते है ऐसा कुछ नहीं होगा! लेकिन हम अतीत से सब ले सकते है। 20 वीं सदी का आरंभ तेल को लेकर हुए युद्धों ने विश्व को एक नया आकार दिया। कहीं ऐसा तो नहीं कि 21वीं सदी पानी को लेकर नये युद्ध खड़े करें और दुनिया के नक्शे फिर बनाने पड़े?

आप विज्ञान, या वैदिक धर्म से जुड़ी पुस्तक उठा लीजिये। उसमें एक चीज स्पष्ट है कि मनुष्य की उत्पत्ति के समय भरपूर मात्रा में पानी था। लेकिन क्या यह पानी आखिरी तक होगा? जबकि जल, जीवन का इन्सान के सतत विकास का आधार है परन्तु क्या आगे यह रहेगा या मिट जायेगा?

हो सकता है आज के हमारे सवाल न्यूज़ चैनल की धार्मिक डिबेट, राजनीती दलों की रैलियों के शोर में दब जाये, परन्तु कहीं ना कहीं हम पानी के लिए एक भंयकर जंग की ओर नहीं जा रहे हैं? पिछले कई दशकों से संयुक्त राष्ट्र के महासचिवों ने जल संघर्ष पर चेतावनी दी है। साल 1985 बुट्रोस-घाली ने कहा था कि अगला युद्ध राजनीति के लिए नहीं, पानी के लिए लड़ा जाएगा। इसके बाद 2001 में कोफ़ी अन्नान ने चेताया कि पीने के पानी के लिए भयंकर प्रतिस्पर्धा भविष्य में संघर्ष और युद्ध का कारण बन सकती है। साल 2007 संयुक्त राष्ट्र के महासचिव बान की मून ने कहा कि पानी की कमी इतना बड़ा खतरा है और आने वाले वर्षों में यह युद्धों और संघर्ष के लिए एक शक्तिशाली ईंधन बनने वाला है।

शोधकर्ता बता रहे है कि 20वीं सदी में पानी का उपयोग जनसंख्या की तुलना में दोगुने से भी अधिक दर से बढ़ा है। इससे दुनिया भर के शहर-लीमा और केप टाउन से लेकर बसरा और चेन्नई तक पानी के लिए तरस रहे हैं। लेकिन एक चेन्नई शहर का नाम लेकर हम बच नहीं सकते, आज भारत में ना जाने कितने शहर चेन्नई की कतार में पानी की बाल्टी लिए खड़े दिख रहे हैं।

वर्ल्ड इकोनॉमिक फ़ोरम की ग्लोबल रिस्क बाय इम्पैक्ट सूची में 2012 के बाद से हर साल जल संकट को शीर्ष पांच में स्थान दिया गया है। 2017 में हालात चरम पर पहुंच गए। लगातार पानी की कमी कारण पूरे अफ्रीका और मध्य पूर्व में 20 मिलियन से अधिक लोगों को अपने घर छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। ये आंकड़े दर्शाते है कि दुसरे विश्व युद्ध में बम के धमाकों और हिरोशिमा पर परमाणु हमले के बाद यह संख्या विस्थापित हुई। इसे हम द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से सबसे खराब मानवीय संकट कह सकते हैं? संयुक्त राष्ट्र और विश्व बैंक की भविष्यवाणियों में लगातार कहा गया है कि पानी की कमी से दुनिया की लगभग 40% आबादी प्रभावित होती है, 2030 तक सूखे के कारण 700 मिलियन लोगों को विस्थापन का खतरा है।

यही नहीं, विश्व बैंक की एक रिपोर्ट में ये तक कहा गया है पानी की कमी से विस्थापन होगा और संघर्ष भड़केगा। विश्लेषकों का कहना है कि पानी की बढ़ती कमी हिंसक संघर्ष को बढ़ावा देगी। क्योंकि बेईमान राजनेता, शक्तिशाली निगम और शक्तिहीन लोग कम होती पानी की आपूर्ति के लिए लड़ेंगे। नतीजे आना शुरू भी हो गये हैं। कई राज्यों के नदी और पानी को लेकर आपसी टकराव किसी से छिपे नहीं हैं। इसके अलावा हाऊसिंग सोसाइटियों में निगम अधिकारी और जनता आमने-सामने होते हैं, गली मोहल्ले में पानी को लेकर झगड़े आम बात है।

हो सकता है अभी कुछ लोग इस खतरे से इत्तेफाक ना रखें। किन्तु उन्हें सोचना होगा कि आज से तीन दशक पहले किसने सोचा था कि भारत जैसे देश में एक लीटर पीने के पानी की न्यूनतम कीमत 20 रूपये होगी? अगर इस पर तेल जैसा विंडफॉल टैक्स लगा दिया जाये इसके अलावा राज्य और केंद्र के टेक्स लगा दिए जाये तो एक लीटर पानी हमें उसी रेट मिलेगा जितना पेट्रोल और डीजल मिल रहा है?

ये उदहारण देने के पीछे का कारण है पत्रकार स्टीवन सोलोमन की पुस्तक वॉटर: द एपिक स्ट्रगल फॉर वेल्थ, पावर एंड सिविलाइजेशन जिसमें वे कहते है कि आधुनिक दुनिया में कई संघर्ष पानी के लिए लड़े जाएंगे क्योंकि यह 'दुनिया के सबसे दुर्लभ महत्वपूर्ण संसाधन' के रूप में तेल से भी आगे निकलने वाला है। मैग्सेसे पुरस्कार विजेता राजेंद्र सिंह, जिन्हें भारत के जलपुरुष के रूप में भी जाना जाता है, ने कहा था कि भारत में सरकार, कॉरपोरेट सेक्टर पांच तत्वों, खासकर पानी के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। आजादी के समय ग्रामीण भारत में 15 लाख जल निकाय थे, लेकिन अब 12 लाख से अधिक जल निकाय या तो अतिक्रमण का शिकार हो गए हैं या प्रदूषित हो गए हैं। लगभग 72% जल निकाय सूख रहे हैं, लोग प्यासे रह रहे हैं, जो पानी हम सदियों से मुफ्त में इस्तेमाल कर रहे थे उस पर भी कार्पोरेट का कब्जा होता दिख रहा है! इस कारण दुनिया के विभिन्न हिस्सों में संघर्ष जारी है।

- जारी पृष्ठ 7 पर

महर्षि की 200वीं जयन्ती पर आर्यसमाज द्वारा राष्ट्रहित में उठाए गए मुद्दों की श्रृंखला में

देश, धर्म, संस्कृति और संस्कारों को लेकर उत्पन्न हुई चुनौतियों का चिन्तन

4

अंधविश्वास : व्यक्ति, परिवार, समाज और देश की उन्नति में बड़ी बाधा

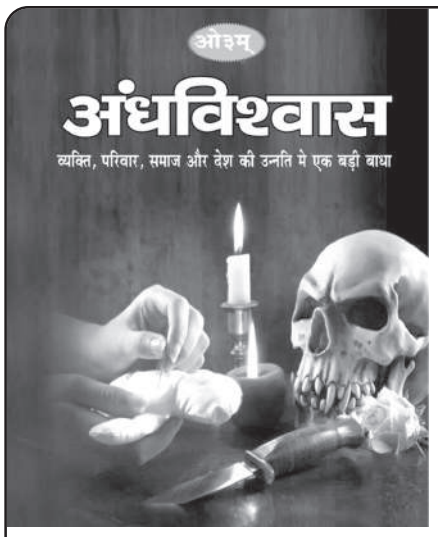

..... अंधविश्वास एक ऐसा विश्वास है, जिसका कोई कारण ही नहीं होता। आगे चलकर एक छोटा बच्चा अपने घर, परिवार एवं समाज में जिन परम्पराओं, मान्यताओं को बचपन से देखता एवं सुनता आ रहा होता है, वह भी उन्हीं का अक्षरश: पालन करने लगता है। यह अंधविश्वास उसके मन-मस्तिष्क में इतना गहरा असर छोड़ देता है कि जीवनभर वह इन अंध-विश्वासों से बाहर नहीं आ पाता। यानि अगर बचपन में बच्चे को यह बता दिया जाये कि 'जैसा कर्म-वैसा फल' तो शायद वो बच्चा आगे चलकर किसी अंधविश्वास के चक्कर में न आये। .....

सत्य घटनाओं पर आधारित सॅम्पूर्ण पुस्तक स्कैन करके स्वयं पढ़ें और दूसरों को भी पढ़ाएं : पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339
ऑन लाइन खरीदें : www.vedicprakashan.com

आस्था का अर्थ है विश्वास, एक आशा, किसी के प्रति निष्ठा अथवा भरोसा और अन्धविश्वास का सरल अर्थ है किसी व्यक्ति ने आपसे कोई बात कही और आपने बिना जांच-पड़ताल किए उस पर पूरा या अंधा विश्वास कर लिया। आपने कोई प्रमाण भी नहीं मांगा बल्कि आप सामने वाले व्यक्ति से प्रभावित होकर उसे सत्यनिष्ठ मान बैठे। यानि आस्था और अंधविश्वास में बहुत महीन सूक्ष्म-सा अन्तर है और शायद यही अन्तर जन्म देता है अनेकों अपराधों को।

थोड़े समय पहले उत्तर प्रदेश के आगरा में एक तान्त्रिक ने अंधविश्वासों के चलते ढ़ाई साल के मासूम बच्चे की बलि दे दी थी। हत्या के बाद बच्चे को एक बोरे में भरकर नदी में फेंक दिया। कुछ दिनों बाद पुलिस ने तान्त्रिक को गिरफ्तार कर मामले का खुलासा कर दिया।

दूसरा मामला दिल्ली का है यहाँ एक महिला ने बंगाली बाबा का पर्चा पढ़ा और बीमार बेटे का तंत्र-मंत्र के जरिए इलाज कराने चल निकली। तान्त्रिक ने महिला से भक्ति और आस्था से तंत्र के नाम पर लाखों रुपये लूटे और साथ में उसकी आबरू भी। ऐसे ही एक मामले में परीक्षा में सफलता की आस में युवती बंगाली बाबा से मिली लेकिन उसे हवस का शिकार बना डाला।

न तो ये बच्चे की बलि देने का पहला और एकमात्र मामला है और न ही किसी बंगाली बाबा की ऐसी करतूत का पहला उदहारण। ऐसी घटनाएँ देश में लगातार घटित हो रही हैं। तो ऐसे में सवाल यहीं आ जाता है कि आस्था और अंधविश्वास का रिश्ता क्या है? जिसकी आड़ में हर रोज न जाने कितनी हत्या, अपराध और ठगी के मामले सामने आ रहे हैं?

आप बस में सफर करते होंगे, कभी शहर में घूमते हुए तो कभी ऑनलाइन सर्फिंग करते वक्त ऐसे बाबाओं के विज्ञापन आपने भी खूब देखे होंगे, जिनमें लिखा होता है कि 'चौबीस घंटे में खोया प्यार वापस पाएं, कारोबार में रुकावट, बेरोजगारी, सौतन और दुश्मन से छुटकारा... ऐसी किसी समस्या का 100 प्रतिशत गारंटीड समाधान चाहिए तो कॉल करिए'— यही वो कॉल है जो एक बार करता है फिर फंसता ही चला जाता है।

अक्सर कहा जाता है कि आस्था में तर्क नहीं करना चाहिए, उसे चुपचाप मान लेने में ही भलाई है। किन्तु ऐसा वही लोग कहते हैं जिनके पास या तो तर्क का जवाब नहीं होता या फिर जो आस्था के साथ तर्क जोड़ने को पाप समझते हैं। परिणाम अभी कुछ दिनों पहले तेलंगाना में एक व्यक्ति ने किसी तान्त्रिक के कहने पर अपनी नन्हीं और मासूम बच्ची की बलि दे दी थी। सिर्फ इसलिए कि लंबे समय से बीमार चल रही उसकी पत्नी ऐसा करने से स्वस्थ हो जाएगी।

अगर ऐसे अपराधों का विश्लेषण करें तो ये सोच कहाँ से पनपी कि बेटी की बलि से पत्नी स्वस्थ हो जाएगी? दरअसल वैदिक युग में ज्ञान, विज्ञान के केंद्र ऋषि-मुनियों के आश्रम हुआ करते थे। ऋषि-मुनि वेद आयुर्वेद यानि औषधियों के ज्ञाता भी थे। कोई बीमार होता तो रुग्ण व्यक्ति आश्रमों का रुख किया करते थे। वहां रोग के लक्षण देखकर ऋषि-मुनियों द्वारा उन्हें औषधि दी जाती थी। लोग स्वस्थ हो जाते तो लोगों के मन में स्वयं ही ऋषि-मुनियों के प्रति विश्वास, आस्था, सम्मान का भाव पनपता था। वो बाबा अब नहीं रहे, अब हो गए हैं ढोंगी बाबा। आम जनता का विश्वास तो बना रहा पर बाबा बदल गए।

अब ज्ञान का कबाड़ा कैसे होता है और अंधविश्वास कैसे सभ्य समाज में अपनी पकड़ बनाता है कोई भारत से सीखे। संस्कृत आयुर्वेद और योग, निश्चित ही हमारी महान् विद्याएं रही हैं। लेकिन मध्यकाल आते-आते संस्कृत सिर्फ मंत्रपाठ की भाषा बना दी गयी। आयुर्वेद सिर्फ कब्ज और गुप्त रोगों का इलाज बन गया। यहीं से पनपने लगे बाबा, जिन्होंने अपने मन्त्र बना लिए। आस्था वाले की आड़ में तंत्र-मंत्र के माध्यम से रोगों के निदान का कारोबार आरम्भ कर दिया। चूंकि इनके प्रति समाज की परम्परागत आस्था रही तो इन लोगों ने उस दैवी आस्था को उनके दु:ख, क्लेश, बीमारी आदि को अंधविश्वास का वो जामा पहनाया और अब ये मासूम लोगों का जीवन लील रहा है।

हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने भी सोचा नहीं होगा कि आगे चलकर उनके द्वारा खोजी गयी पद्धति को आस्था के नाम पर केवल भ्रम फैलाकर कुछ लोग आर्थिक, व्यापारिक, पारिवारिक या सामाजिक तबाही और बरबादी के मार्ग प्रशस्त कर देंगे।

उदाहरण के तौर पर किसी व्यक्ति की नौकरी नहीं लग रही तो अब उसे यह संदेह होने लगा कि ऐसा लगता है कि किसी ने उस पर काला जादू करवा दिया है। वह इसी सोच में डूबा रहता है और अपने चिन्ता और संकट के बादल को छांटने के लिए वह तान्त्रिक और बाबाओं का रुख करता है। वह उनके आसपास उठने-बैठने लगता है। इस तरह उसने भौतिक संसार से कटकर एक अंध-विश्वासी दुनिया में कदम रख दिया जहां उसकी तर्क शक्ति और विवेकशीलता दम तोड़ रही होती है। अब उसके सारे दिमागी फैसले सिर्फ विश्वास पर आधारित हो जाते हैं। वह हर चीज पर अब अंधा यकीन करने लगता है। उसका व्यवहार ही बिल्कुल बदल जाता है जिसका फायदा उठाकर तान्त्रिक अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत करते हैं और अपने इस ग्राहक को जिस तरीके से चाहते हैं, जी भर कर लूटते हैं।

अंधविश्वास एक ऐसा विश्वास है, जिसका कोई कारण ही नहीं होता। आगे चलकर एक छोटा बच्चा अपने घर, परिवार एवं समाज में जिन परम्पराओं, मान्यताओं को बचपन से देखता एवं सुनता आ रहा होता है, वह भी उन्हीं का अक्षरश: पालन करने लगता है। यह अंधविश्वास उसके मन-मस्तिष्क में इतना गहरा असर छोड़ देता है कि जीवनभर वह इन अंधविश्वासों से बाहर नहीं आ पाता। यानि अगर बचपन में बच्चे को यह बता दिया जाये कि 'जैसा कर्म-वैसा फल' तो शायद वो बच्चा आगे चलकर किसी अंधविश्वास के चक्कर में न आये।

दरअसल व्यक्ति असफलता के असली कारणों को न जानकर हमेशा इन अंघविश्वासों में फंसकर रह जाता है या कहें तो वह सही-गलत को सोच ही नहीं पाता। अंधविश्वास न केवल अशिक्षित एवं निम्न आय वर्ग के लोगों में देखने को मिलता है, बल्कि यह काफी शिक्षित, विद्वान्, बौद्धिक, उच्च आय वर्ग एवं विकसित देशों के लोगों में भी कम या ज्यादा देखने को मिलता है। यह आमतौर पर पीढ़ी दर पीढ़ी देखने को मिलता है। अंधविश्वास समाज, देश, क्षेत्र, जाति एवं धर्म के हिसाब से अलग-अलग तरह के होते हैं। विभिन्न प्रकार के अंधविश्वास आमतौर पर समाज में देखने को मिलते हैं, जैसे आंख का फड़कना, घर से बाहर किसी काम से जाते समय किसी व्यक्ति द्वारा छीक देना, बिल्ली का रास्ता काट जाना, 13 तारीख को पड़ने वाला शुक्रवार या 13 नवंबर को अशुभ मानना, हथेली पर खुजली होना, काली बिल्ली में भूत-प्रेत का वास होना, परीक्षा देने जाने से पहले सफेद वस्तु जैसे दही आदि का सेवन करना, सीढ़ी के नीचे से निकलना, मुंह देखने वाले शीशे का टूटना, घोड़े की नाल का मिलना, घर के अंदर छतरी खोलना, लकड़ी पर दो बार खटखटाना, कंधे के पीछे नमक फेंकना, श्राद्ध के दिनों में नया काम शुरू न करना या नए कपड़े न सिलवाना आदि। इस सम्बन्ध में बात करने पर सब एक ही बात बोलते है कि—''हमारे यहाँ तो यही परम्परा चलती आई है।''

इसके अतिरिक्त जो लोग भूत से मिलने या भूत के दिखने की बात करते हैं, वे सिर्फ कहानियां गढ़ते हैं या फिर किसी मानसिक रोग से पीड़ित होते हैं, जिससे अजीबो-गरीब चीजें दिखने लगती हैं या अजीबो-गरीब आवाज सुनाई देने लगती हैं, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं होता। चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में इसे 'हैलुमिनेशन' कहते हैं।

ऐसे में सवाल ये भी बन जाता है कि धर्म के नाम पर खड़ी की गई इन समस्याओं का समाधान क्या है? अगर किसी ने अंधविश्वास के दल-दल में कदम रख ही दिया है तो निम्नलिखित बातों पर गौर करके आप इस खौफनाक दल-दल से बाहर निकल सकते हैं—

-तोते से भविष्य बताने वालों ने कभी अपना भविष्य नहीं जाना कि जीवन भर उनको ऐसे ही सड़क पर क्यों बैठना पड़ गया?

-टीवी पर बैठकर भविष्य बताने वाले कभी बड़ी घटना, भूकंप, तूफान, आपदा, बाढ़, दुर्घटना आदि की भविष्यवाणी आज तक नहीं कर पाए ताकि लाखों लोगों की जान बचाई जा सके।

-नोएडा के ट्विन टावर में जिन लोगों ने मुहर्त देखकर फ्लैट खरीदे थे उनको किसी ने नहीं बताया कि यहाँ मत खरीदो, ये ईमारत गिराई जानी है।

क्या हास्यपद स्थिति है? टी.वी. कम्पनी को विज्ञापन से पैसा मिल रहा है, भविष्य बताने वाला कोठी बना रहा है, पर बेचारा दर्शक और पीड़ित अपना पैसा इस काम में फूंककर लगातार अंधविश्वास की दुकानें बदल रहा है कि शायद ये वाला कुछ ठीक बता दे या वो वाला बाबा?

विश्वास कीजिए कुछ नहीं बदलना, आइये खुद को बदलते हैं इस दल-दल से

- शेष पृष्ठ 7 पर

श्री विनय आर्य जी द्वारा 'द अनम्यूट' चैनल (सिडनी) को दिए गए साक्षात्कार के मुख्य अंश

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती की श्रृंखला में आस्ट्रेलिया में वैदिक धर्म के प्रचार हेतु आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान वहां के 'द अनम्यूट' चैनल के सम्पादक श्री सन्नी सिंह ने सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी का इंटरव्यू लिया। उन्होंने परिवार, समाज और धर्म को लेकर पूछे गए विभिन्न प्रश्नों का उत्तर बड़ी सरलता से दिया।

.....सारी दुनिया में धर्म तो एक ही है। बड़ा या छोटा धर्म को बताना या मानना बिल्कुल निराधर बात है। और धर्म का तो अपने आपमें व्यापक स्वरूप है, जो हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। लेकिन धर्म का एक अर्थ कर्तव्य भी है, जैसे माता-पिता का धर्म है अपनी संतान को पाल पोसकर बड़ा करना, उन्हें पढ़ाना लिखाना, लायक बनाना, यह सभी मत जैसे मुसलमान, ईसाई, पारसी जो भी जितने भी मत हैं, सभी में माता-पिताओं का एक समान कर्तव्य है, उसके साथ ही अध्यापक का भी एक यही धर्म है कि बच्चों को शिक्षित करना। तो इस तरह धर्म की इस कर्तव्य पूर्ण व्याख्या को आप कहीं तक भी घटाते जाएं सबका एक ही उत्तर रहेगा, कर्तव्य परायणता।.....

हमें प्यार से जीवन जीने के लिए किस तरह के संतुलन की आवश्यकता है?

उत्तर - परिवार में प्रेम का वातावरण बनाए रखने के लिए हमें सबसे पहले तो अपने बच्चों के साथ समय बिताना चाहिए। धन-दौलत कमाने की भाग दौड़ में हमें यह भी सोचना चाहिए कि हमारी असली संपत्ति तो हमारे अपने बच्चे हैं। इसलिए हमें अपने और उनके बीच गैप नहीं आने देना चाहिए। दूसरा हमें आपस में छोटी छोटी बातों को लेकर मनमुटाव नहीं करना चाहिए। अगर कोई बात हो भी जाए तो आपस में बातें करनी बंद नहीं करनी चाहिए, बच्चों को माध्यम बनाकर एक दूसरे को मैसेज नहीं भेजना चाहिए, इससे बच्चों की मानसिकता पर प्रभाव पड़ता है और घर का वातावरण भी खराब होता है। मानसिक संतुलन के लिए घर में प्रेम प्रसन्नता का वातावरण होना ही चाहिए। इसके लिए आपस में प्रेम सौहार्द बनाकर चलें तो सबकुछ अच्छा रहता है। और अगर कोई छोटी मोटी बात हो भी जाए तो उसे बड़ा इस्यु न बनने दें, नयी सुबह के साथ ही उसे हमेशा के लिए भुलाकर आगे बढ़ें।

इसके साथ-साथ सभी माता-पिताओं को यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि आप यहां मल्टीकल्चर सोसायटी में रहते हैं, इसलिए आपके बच्चों को यह जानकारी अवश्य होनी चाहिए कि आप भारत के रहने वाले हैं, भारत की वैदिक, धर्म, संस्कृति और संस्कारों की विचारधरा संपूर्ण विश्व में सनातन है। इस विषय में बच्चों को यह भी बताएं कि वेद ईश्वर की वाणी है और इसके ज्ञान विज्ञान से ही सारा संसार उन्नति के रास्ते पर आगे बढ़ रहा है। बच्चों को इस तरह की जानकारी होगी तो वे कोई प्रश्न सामने आने पर उसका उत्तर भी देंगे और इधर-उधर भटकने से भी बचे रहेंगे। घरों में प्रेम प्रसन्नता बनी रहेगी।

आज सनातन में ज्यादा धर्म परिवर्तन हो रहा है, क्या आप ऐसा मानते हैं?

उत्तर - धर्म परिवर्तन के पीछे सबसे बड़ा कारण मैं अज्ञानता को मानता हूं। जो व्यक्ति अपनी सनातन संस्कृति के महत्व और विशेषताओं को नहीं जानता और मानता तो उसका दूसरों के प्रभाव में आकर बिना सोचे-समझे उनके पीछे चले जाना इसका सबसे बड़ा कारण है। वेद ईश्वर की वाणी है, वेदों का ज्ञान विज्ञान ही मानव जीवन और संपूर्ण संसार की उन्नति प्रगति और सफलता का आधर है। वैदिक संस्कृति सबसे श्रेष्ठ संस्कृति है और सबसे प्राचीन संस्कृति है, वेदों की देन ही है कि आज मनुष्य चारों ओर निरंतर आगे बढ़ रहा है। सबसे बड़ी बात यह है कि आज के समय में हमने इसको गहराई से समझना छोड़ दिया है और हम लोग पूजा-पाठ तक ही सीमित होते जा रहे हैं। संपूर्ण विश्व को संस्कृति, सभ्यता, संस्कार, भाषा, विमान और जो कुछ भी आधुनिक परिवेश में हम देख रहे हैं, वह सब वेदों की ही देन है। सिर उठाकर जीने का जो ज्ञान मिला है वह हमें वेदों से ही तो मिला है। लेकिन जब हम अपने बच्चों को यह सब नहीं सिखाएंगे, नहीं बताएंगे तो उन्हें ऐसा लगता है की दूसरे लोग जो कह रहे हैं, बता रहे हैं वह लॉजिकल है, प्रमाणिक है और हम जो कर रहे हैं वहीं अनलॉजिकल है। वह केवल परंपरा है। क्योंकि उन्हें उस बारे में जानकारी नहीं होती। हवन की अगर बात की जाए तो आधुनिक युवा पीढ़ी को लगता है कि यह वेस्टेज है। घी, सामग्री का प्रयोग करके हवन करना समय और धन की हानि है, लेकिन जब हम उन्हें बताते हैं कि पर्यावरण की शुद्धि के लिए हवन एक साइंस है, इसका एक विज्ञान है, उससे पर्यावरण शुद्धि होती है और उसका हमने जो रिसर्च किया है, जब हम उनको दिखाते हैं और बताते हैं तो वे फिर उसको जानने की कोशिश भी करते हैं। कहने का मतलब है कि धर्म परिवर्तन पर अगर ब्रेक लगेगा तो उसका आधार यही होगा कि हम अपने परिवार को, अपने समाज को, बच्चों को अपनी संस्कृति के बारे में, सनातन संस्कृति के मूल आधार वेदों के बारे में, ऋषि मुनियों के बारे में, अपने धर्म के बारे में उनसे चर्चा करें। उनको बताएं संसार में सबसे श्रेष्ठ धर्म और सबसे श्रेष्ठ संस्कृति हमारी अपनी है, तो फिर वे दूसरों के कुचक्र में नहीं फंसेंगे।

आज हो रहे धर्म परिवर्तन में क्या माता-पिता और गुरु भी जिम्मेदार हैं?

उत्तर - जी हां, माता-पिता और गुरुजनों को बिल्कुल जिम्मेदार माना जा सकता है। क्योंकि गुरुजनों की जिम्मेदारी केवल यह नहीं होती कि वे पूजा-पाठ ही सिखाते रहें या कथा ही सुनाते रहें। उन्हें इससे भी आगे आकर अपनी संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों का ज्ञान भी युवा पीढ़ी को देना चाहिए। वेदादि शास्त्रों के विषय में युवाओं को बताना चाहिए, जिससे उन्हें अपने कल्चर का पूरी तरह से ज्ञान हो सके। इसके साथ ही माता-पिता भी अपने बच्चों को प्रेरित नहीं करते, युवाओं के मन में उठने वाले प्रश्नों का समाधान होना बहुत जरूरी है। अगर उनके भीतर प्रश्नों का उदय हो रहा है और उनको अपने यहां पर सही जानकारी नहीं मिल पा रही है तो फिर वे दूसरी जगह पर जाकर अपनी बात रखेंगे और दूसरे लोग पूरे लॉजिक के साथ उन्हें अपनी बात समझाने की कोशिश करेंगे। अब इन्हें तो अपनी संस्कृति और परम्पराओं के विषय में कुछ पता नहीं था, और पता भी था तो वह आधा अधूरा और दूसरे लोग पहले से तैयार थे, तो अपनी संस्कृति की जानकारियों के अभाव में दूसरों के सामने हमारी युवा पीढ़ी निरन्तर हो जाती है और फिर उनके ऊपर दूसरों का प्रभाव असर करने लगता है। इसलिए माता-पिता को भी अपने बच्चों से समय-समय पर चर्चा करनी चाहिए और गुरु-ज्ञानी संतों को भी केवल कथा ही नहीं बल्कि अध्यात्म के साथ ही वेद के विज्ञान का प्रचार-प्रसार भी करना चाहिए, उन्हें समझाना चाहिए। तो यह एक बहुत अच्छा तरीका है कि हम अपने बच्चों से आत्मीयता पैदा करें और उन्हें अपने धर्म, संस्कृति और संस्कारों के बारे में विस्तार से बताएं जिससे वे इधर-उधर भटकने से बचे रहेंगे।

धर्म परिवर्तन के विषय को लेकर क्या कभी आपके सामने भी युवा पीढ़ी की ऐसी बातें आई हैं, जिनका आपने समाधान किया हो?

उत्तर - जी हां, लगातार ऐसी बातें आती ही रहती हैं और उनका हमने पूरे साइंटिफिक तरीके से समाधान किया है। कई बार 16, 17, 18 वर्ष के बच्चे जैसे यज्ञ के विषय में ही कहते हैं कि आप जो हवन कर रहे हैं, उसमें जो सामग्री डाली जा रही है, जो भी कुछ डाला जा रहा है और जो भी आप अग्नि में चढ़ा रहे हैं, तो वह सब तो नष्ट हो रहा है, इससे क्या लाभ है? तब हमने उन्हें बताया कि यज्ञ पूरी तरह से एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है और यह केवल कहा ही नहीं बच्चों को बताया ही नहीं, हमने उनको करके दिखाया और रिसर्च का फोल्डर भी दिखाया, जो हमने यज्ञ के ऊपर रिसर्च किया है, उसके प्रमाण भी दिखाए। उन्हें पढ़ाया, समझाया तो वे हवन को बहुत अच्छा मानने लगे और सबने यही कहा की हवन एक बहुत ही वैज्ञानिक और वैधानिक तरीका है। इसी तरह वेद के ज्ञान विज्ञान की महिमा को भी उन्होंने माना, तो इस तरह युवाओं को सुदिशा देने का कार्य बहुत जरूरी है। जिसे हम लगातार कर रहे हैं।

आज सब लोग अपने धर्म को बड़ा बता रहे हैं, आप हमें यह बताएं कि धर्म हमें जोड़ता है या बांटता है?

उत्तर - सारी दुनिया में धर्म तो एक ही है। बड़ा या छोटा धर्म को बताना या मानना बिल्कुल निराधार बात है। और धर्म का तो अपने आपमें व्यापक स्वरूप है, जो हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। लेकिन धर्म का एक अर्थ कर्तव्य भी है, जैसे माता-पिता का धर्म है अपनी संतान को पाल पोसकर बड़ा करना, उन्हें पढ़ाना लिखाना, लायक बनाना, यह सभी मत जैसे मुसलमान, ईसाई, पारसी जो भी जितने भी मत हैं, सभी में माता-पिताओं का एक समान कर्तव्य है, उसके साथ ही अध्यापक का भी एक यही धर्म है कि बच्चों को शिक्षित करना। तो इस तरह धर्म की इस कर्तव्य पूर्ण व्याख्या को आप कहीं तक भी घटाते जाएं सबका एक ही उत्तर रहेगा, कर्तव्य परायणता। लेकिन कुछ मतों द्वारा धर्म की व्याख्या गलत तरीके से करने के कारण विकृति आ जाती है। धर्म का मतलब सीधा और सरल तरीके से आप समझें कि यह सबकी अपनी-अपनी डयूटी है, कर्तव्य है। इसलिए धर्म हमें बांटता नहीं, मत संप्रदाय ही बांटते हैं। किसी मत ने कहा ऐसा करें, दूसरे ने कहा वैसा करें तो यही कारण है कि लोग अलग-अलग टुकडो में बंटते गये और अभी भी बंट रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया में जैसे एक कानून है कि सड़क पर लेफ्ट साइड में सबको चलना है, अब दूसरा आकर कहे कि आपको राइट चलना है और तीसरा कहे कि आपको बीच में चलना है। तो सब के सब बंट जाएंगे, कोई इस साइड में चलेगा, कोई उस साइड में चलेगा और कोई बीच में चलेगा। मतलब कहीं पर भी देखें जो कल्याण कारी नियम है, जो व्यवस्था है, जो अनुशासन है वही धर्म है। जबकि जो अलग-अलग रीति रिवाज हैं, वे अलग-अलग मतों के कारण हैं। उनके विषय में कुछ न कहते हुए आपके प्रश्न का उत्तर यही है कि धर्म तो हमें जोड़ता है, बांटता नहीं है।

वेद में कहा गया है कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की रक्षा करे, अगर आप देखें कि मनुष्य सांप से, हाथी से, शेर या जितने हिंसक जानवर हैं उनसे बचने के लिए घर में ताले थोड़ा ही लगाते हैं। मनुष्य से, यानी मनुष्य के रूप में जो लोग चोर हैं उनसे बचने के लिए घरों में ताले लगाते हैं। उनसे ही डरता है मनुष्य। इसलिए वेद का संदेश है कि सब मनुष्य एक दूसरे की रक्षा करें। वेद धर्म सबके लिए कॉमन है। सबके लिए समान है, सबके कल्याण की बात करने वाला केवल वैदिक धर्म है। इसलिए वेद यानी धर्म सबको जोड़ता है और दूसरी चीजें हैं जो मतों के रूप में हमें बांटती हैं। धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझना चाहिए और कभी भी मानवता का शत्रु नहीं बनना चाहिए तो फिर धर्म केवल और केवल जोड़ने का ही काम करेगा।

आजकल अनेक लोग चमत्कार की बात करते हैं, तो क्या सच में चमत्कार होते हैं?

- जारी पृष्ठ 5 एवं 7 पर

उत्तर – ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार जो होता है, वही चमत्कार होता है। इसके सिवाय दुनिया में कोई चमत्कार नहीं होता। अगर कहीं पर किसी को कोई चमत्कार नजर आता है तो यह उसकी आंखों का बहुत बड़ा धोखा है, यह एक हाथ की सफाई है, इसे एक जादू भी कह सकते हैं। क्योंकि चमत्कार नाम की कोई चीज दुनिया में किसी के करने से कभी नहीं होती। मान लीजिए कि अगर किसी को कोई बीमारी है, जैसे बुखार ही मान लीजिए तो बुखार की दवाई ली, क्रोसिन की टेबलेट ली और बुखार ठीक हो गया, तो यह भी अपने आप में चमत्कार है। लेकिन यहां पर एक बात सोचने की है कि क्रोसिन की दवाई जो भी लेगा, उसका तो बुखार उतरना हीं उतरना है। तो इसमें चमत्कार की क्या बात है? क्योंकि वह दवाई का अपना असर है और वह सबके ऊपर समान रूप से काम करेगी। इसी तरह ईश्वर की व्यवस्था में उसके नियम और कानून में कोई अंतर नहीं है, वह सबके लिए समान है, सबके ऊपर एक जैसी कृपा करता है और सबको अपने कर्मों का फल भी बराबर देता है। इसलिए मैं कहना चाहूंगा कि बिना लॉजिक की बातों को नहीं मानना चाहिए। अपनी बुद्धि और विवेक का प्रयोग करना चाहिए। अगर चमत्कार होते तो जो जादूगर चमत्कार करते हैं फिर वे इस तरह से मारे-मारे क्यों फिरते। इसलिए अपने विज्ञान को मानिए, अपनी बुद्धि से विचार करें और ईश्वर की व्यवस्था पर विश्वास करके अपने कर्म पथ पर आगे बढ़ते जाएं उसी में कल्याण है।

आज के समय में युवाओं को हम धर्म का मार्ग कैसे दिखाएं?

उत्तर – प्रत्येक मनुष्य को सही और गलत का निर्णय करने के लिए परमात्मा ने विशेष रूप से बुद्धि प्रदान की है। इसलिए यह सब जानते हैं कि सत्य क्या है और असत्य क्या है। लेकिन लोभ और लालच में पड़कर गुरुओं के चक्कर में आ जाते हैं और सोचते हैं कि किसी के चमत्कार से हम बिना कुछ करे यहां से वहां तक पहुंच जाएंगे, जो कि बिल्कुल निराधार बात है। जो व्यक्ति जैसा कर्म करेगा उसका परिणाम भी उसे वैसा ही प्राप्त होगा। लेकिन आजकल शॉर्टकट अपनाकर लोग आगे बढ़ना चाहते हैं और जिनको हम चमत्कारी कहते हैं, वे लोग समाज की इस कमजोरी को जानते हैं। इसलिए वे कहते हैं कि आओ, हम तुम्हें सब कुछ तुम्हारे अनुकूल प्रदान कर देंगे। अब धन और समय सब बर्बाद करके फिर बाद में लोग पछताते हैं। वे लोग सोने को 4 गुना, पैसे को 4 गुना करने की बात करते हैं और भोले-भाले लोग उनके चक्कर में आकर फंस जाते हैं, वे यह नहीं समझते कि अगर ये तथाकथित चमत्कारी ऐसा कर पाते तो फिर उन्हें इधर-उधर भागने की क्या जरूरत थी? इसलिए गलत और सही को समझना धर्म और अधर्म को समझना यह बहुत जरूरी है।

धर्म के नाम पर ऐसे लोग जो अपनी दुकान चला रहे हैं और इस तरह से जब युवा लोगों का विश्वास टूटता है उन्हें लगता है कि हमारे साथ धोखा हुआ है तो फिर वे भी धर्म से दूर भागने लगते हैं। इसलिए वेद का जो संदेश है, जो उपदेश है, वहां पर कर्म सिद्धांत की शिक्षा दी जाती है, उसे पढ़कर, सुनकर, समझकर व्यक्ति फिर सही रास्ते पर चलता है। सुख शांति और आनंद पूर्ण जीवन जीना सी जाता है। क्योंकि सही और गलत के चक्कर से बचकर व्यक्ति फिर चमत्कारी के चंगुल में नहीं फंसता बल्कि अपने कर्म की कुशलता से स्वयं आश्चर्यजनक कीर्तिमान स्थापित करने लगता है। तो युवाओं को किसी के बहकावे में ना आकर अपनी बुद्धि से अपने मन से और अपने विवेक से कार्य करना चाहिए। वैदिक धर्म को अपनाकर ही हम अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। यह हमें अवश्य सोचना चाहिए।

आज के समय में इंसानियत गिरती जा रही है और स्वार्थ बढ़ता जा रहा है, ऐसे समय में आप इंसानियत की व्याख्या कैसे करोगे?

उत्तर – इसके लिए वेद में कहा है 'मनुर्भव:' अर्थात मनुष्य को मनुष्य बनना चाहिए। मानवता की इससे सुंदर व्याख्या आपको कहीं पर भी नहीं मिलेगी। प्रत्येक मनुष्य दूसरे की सहायता करे और उस स्थिति तक सहायता करें जहां तक उसकी खुद की हानि न हो, वह मनुष्य है। लेकिन इससे भी आगे एक स्थिति ऐसी होती है कि जो मनुष्य अपनी हानि करके भी दूसरे का लाभ करता है, तो वह मनुष्य नहीं बल्कि देवता कहलाता है। जैसे हमारे माता-पिता हैं, वे अपनी चिंता ना करके अपने बच्चों का भला करते हैं। मां खुद गीले में सो करके भी बच्चे को सूखे में सुलाती है, तो इसलिए मां भी देवता है, पिता अपनी जरूरतों को कम करके बच्चे की जरूरतों को पूरा करता है, वह भी देवता है। उसी तरह से अगर कोई भी स्थान हो, रिश्ता हो, पद हो या कोई सामाजिक कार्य हो, उसमें अगर व्यक्ति अपना नुकसान करके भी दूसरे को फायदा पहुंचाता है, तो उसे हम देवता कहते हैं। इसलिए आजकल के बच्चों को भी मनुष्य बनना चाहिए अर्थात अपने माता-पिता के लिए, अपने मित्रों के लिए या पूरे समाज के लिए अगर कोई अपना साथी पढ़ाई में पीछे है, तो उसको उस रूप में सहायता देनी चाहिए, अगर कोई साधन सुविधाओं में पीछे है तो उसका वैसे ही सहयोग करना चाहिए। क्योंकि जितने भी हमारे मंदिर हैं, गुरुद्वारे हैं या फिर जितने भी स्थान हैं, वहां सब जगह मानवता, इंसानियत ही तो सिखाई जाती है, वहां पर जो चित्र लगे हैं, मूर्तियां चाहे राम जी की हो, कृष्ण की हो या फिर गुरु गोविंद सिंह की हो, गुरु नानक देव जी की हो तो सारे महापुरुषों की जो मूर्तियां हैं उन्होंने संपूर्ण मानव जाति को जो शिक्षा दी है, उन्होंने यही तो सिखाया है कि सहयोग करो, सेवा करो, साधना करो, समर्पण करो, देश के लिए, धर्म के लिए, समाज के लिए, मानवता के लिए जीवन जियो। इस तरह से इंसानियत की रक्षा होगी और मनुष्य समाज सुखी और आनंद पूर्ण जीवन यापन करेगा।

वेद 5000 साल पुराने हैं लेकिन आज के बाबा लोग उनमें परिवर्तन कर रहे हैं और युवाओं को आकर्षित कर रहे हैं। अब युवा कौन सी चीज को मानें, क्या करें?

– शेष पृष्ठ 7 पर

कच्छ (गुजरात) आर्य समाज लुढ़वा का 75वां वार्षिकोत्सव-अमृत महोत्सव-ज्ञान ज्योति पर्व के रूप में संपन्न

पाकिस्तान बॉर्डर के निकट गुजरात के गांव की एक आर्यसमाज जो कार्य कर रही है वह सबके लिए प्रेरणा का विषय

हजारों युवा महिलाओं की भागीदारी : रात 2 बजे तक चला कार्यक्रम – आर्यसमाज के पुराने दिनों की याद हुई ताजा

महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताये मार्ग पर चलकर सबकी उन्नति, प्रगति और सफलता पाना सम्भव – विनय आर्य, महामन्त्री

महर्षि दयानन्द की 200वी जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में कच्छ, गुजरात के लुड़वा गांव में स्थित आर्य समाज लुड़वा ने अपना 75वां वार्षिकोत्सव अमृत महोत्सव के रूप में हर्ष और उल्लास से मनाया। ज्ञात हो यूं यह आर्य समाज एक छोटे से गांव में सेवा के कार्य कर रहा है लेकिन इसी गावं और इसी आर्य समाज की प्रेरणा से वेलानी परिवार जोकि आज मुम्बई, रोजड़, पुने, अहमदाबाद और अनेक अन्य स्थानों पर महर्षि दयानंद और आर्य समाज के कार्यो को आगे बढ़ा रहे हैं। उन सभी वेलानी परिवारों की जड़ें यही हैं। उनके पूर्वजों की तपस्थली यही है। इस अवसर पर आयोजित अमृत महोत्सव के इस कार्यक्रम में सभी वेलानी परिवारों के हर आयुवर्ग के लोग यहां पर आए और एक भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। अमृत महोत्सव के इस कार्यक्रम में प्रतिदिन यज्ञ, भजन, प्रवचनों के विशेष आयोजन हुए। आर्य समाज की प्रसिद्ध भजनोपदेशिका अंजली आर्या जी के प्रेरक भजन और उपदेशों से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। इस कार्यक्रम में वहां के क्षेत्रीय प्रसिद्ध कथाकार श्री सांईराम देव जी ने महर्षि दयांनद के जीवन और सेवा कार्यो को काव्य रूप में प्रस्तुत किया। इस अवसर पर आर्य समाज लुड़वा के अनुरोध पर पधारे दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने उपस्थित आर्यजनों को बधाई देते हुए अपने संदेश में देश की वर्तमान चुनौतियों का चिन्तन करते हुए महर्षि दयानंद और आर्य समाज के इतिहास से प्रेरणा लेने की बात कही। आपने अपनी चिरपरिचित शैली में बिछुड़ों को गले लगाना, पारिवारिक रिश्तों को बचाना युवाओं को नशे से बचकर रहने का संदेश दिया। सबकी उन्नति, प्रगति और सफलता का सार संदेश देते हुए विनय आर्य जी महर्षि के बताये हुए रस्ते पर चलने की प्रेरणा दी। इस कार्यक्रम को लेकर पूरे गांव को सजाया गया था, और वहां पर विशेष प्रर्दशनी भी लगायी गयी थी जिसे देखकर सभी आर्यजन प्रेरित हो रहे थे। – ***मन्त्री***

साप्ताहिक स्वाध्याय

गढ़ से टक्कर

गतांक से आगे –

महर्षि दयानन्द ने पत्रों को हाथ में ले लिया। अंधेरे के कारण पढ़ना कठिन था। दीपक मंगवाया गया। लालटेन की रोशनी भी बड़ी मद्धम थी, पत्र पढ़ने में कुछ समय लगा। उचित मौका समझकर पण्डित-मण्डली उठ खड़ी हुई। इस प्रकार धूर्तता होते देखकर महर्षि दयानन्द ने स्वामी विशुद्धानन्द का हाथ पकड़कर कहा कि, बैठ जाइये! निर्णय किये बिना बीच ही में उठ खड़े होना आप जैसे विद्वानों के लिए कदापि उचित नहीं। परन्तु स्वामी विशुद्धानन्द जी न बैठे और महर्षि दयानन्द की पीठ पर हाथ फेरकर कहने लगे कि आप बैठिये, जो कुछ होना था हो चुका।'

पण्डितों का इशारा पाकर काशी नरेश ईश्वरीनारायणसिंह भी खड़े हो गए, और ताली पीट दी। इधर इशारा पहले से बंधा हुआ था। सारा जनसमूह एकदम खड़ा होकर सनातन धर्म की जय बोलने लगा। कोतवाल बड़ा सज्जन था। उसे काशी नरेश का ओछा व्यवहार बहुत अखरा। उसने काशी नरेश से कहा कि आपने ताली पीटकर बहुत बुरा किया। यह कार्य सभा के नियमों के विरुद्ध था। नरेश कोतवाल की बगल में हाथ देकर आगे बढ़ गए और समझाया कि हम-तुम सभी मूर्तिपूजक हैं, तब अपने सामान्य शत्रु को जैसे हो सके पराजित करना ही चाहिये। इस दंगाकाण्ड के नेता काशी नरेश का इशारा पाकर सम्पूर्ण जनसमूह मनमानी करने लगा। किसी ने पत्थर, किसी ने कंकर, किसी ने जूता अधिक क्या कहें, जिसे जो मिला उसने वही उठाया और महर्षि जी की ओर फेंका। जैसे तूफान के समय हवा के जोरदार झोकों के साथ मिट्टी, कंकर, लकड़ी और पत्ता आदि पदार्थ पर्वत की निष्कम्प चट्टान पर टकराते हैं और लज्जित होकर नीचे गिर पड़ते हैं, इसी प्रकार स्वार्थपूर्ण दम्भ द्वारा भड़काए हुए इन अज्ञानी लोगों के फेंके गर्हित पदार्थ भी लज्जित होकर गिर पड़े; संन्यासी के विरोधी-गम्भीर हृदय पर कोई प्रभाव न उत्पन्न कर सके।

पौराणिक दल ने शहरभर में पण्डितों का जुलूस घुमाया, मूर्तिपूजा का जय-जयकार मचाकर अपनी सत्यप्रियता का परिचय दिया और सब स्थानों पर समाचार भेज दिया कि महर्षि दयानन्द परास्त हो गये हैं। शहर में पण्डितों की ओर से विज्ञापन लगा दिये गए कि दयानन्द के पास कोई न जाए, जो जाएगा वह पातकी हो जाएगा। यह सब-कुछ किया गया, परन्तु संसार की आंखों में धूल न डाली जा सकी। देश के पक्षपातहीन समाचारपत्रों ने महर्षि दयानन्द की विजय का ही समाचार प्रकाशित किया। पं० सत्यव्रत सामश्रमी जी ने अपनी प्रत्नकम्रनन्दिनी नाम की मासिक पत्रिका में महर्षि जी की सफलता की घोषणा दी। रुहेलखण्ड नामक पत्र ने लिखा कि महर्षि दयानन्द जी ने काशी के पण्डितों को जीत लिया है। 'ज्ञान प्रदायिनी' (लाहौर) ने समाचार दिया कि इसमें सन्देह नहीं कि पण्डित लोग मूर्तिपूजा की आज्ञा वेदों में नहीं दिखा सके। हिन्दू पोट्रियट ने प्रकाशित किया कि पण्डित लोग यद्यपि अपने शास्त्रज्ञान का अति गर्व करते थे, परन्तु उनकी बड़ी भारी हार हुई।'

महर्षि जी का उपदेश सुनने से रोकनेवाला विज्ञापन भी निष्फल हुआ। हवा का झोंका भ्रमरों को फूल के पास जाने से रोक न सका। लोग और भी अधिक उत्सुकता से संन्यासी का सदुपदेश सुनने जाने लगे। महर्षि दयानन्द की धाक चारों ओर बैठ गई। जिस फौलादी ढाल से टकराकर काशी के सुसंस्कृत तीर कुण्ठित हो गए, तिनकों की क्या मजाल थी कि उस पर अड़ सकें! देश-देशान्तर

में इस शास्त्रार्थ का सम्वाद हवा की तरह फैल गया और अपने साथ महर्षिजी की पाण्डित्यकीर्ति के सौरभ को भी फैलाता गया। रूढ़ि के गढ़ से महर्षि दयानन्द की टक्कर का जो भयंकर शब्द हुआ, उससे दिशएं गूंज उठीं।

– क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुनःप्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

Continue From Last Issue

Rishi Dayananda Saraswati's Influence Outside of India

- Ashwini K. Rajpal, Vancouver Canada email: iffvs1@gmail.com

The work was furthered by *Swami Shankaranand* after reaching Durban on October 4, 1908. He established *Veda Dharma Sabhas* in various cities. *Diwali* was celebrated in South Africa for the first time in 1908 due to Swamiji. *Aryan Youth Association, Durban* was the most powerful organisation for the propagation of *Vedic Dharma* in 1924-1925.

The Association arranged a public meeting in Durban on November 2, 1924 to plan *Rishi Dayananda's* birth centenary. This was celebrated on February 16-22, 1925 with great enthusiasm. A congratulatory message was received from Rev. C.F. Andrews appreciating the work being done by the *Arya Samaj.*

Shuddhi Sanskaars were performed to bring back Indians who had converted to other religions. *Pandit Nardev Vedalankar* organised *Hindi Shiksha Sangh* with fifty-one educational institutions affiliated to it, of which twenty-four were run by *Arya Samaj*. He also started a *Vedic Purohit Mandal*. A World Vedic Conference was organised from November 28 to December 1, 2013 at Durban City Hall.

The *Arya Pratinidhi Sabha of South Africa* had about 50 organisations that were affiliated to it by 2004. There were twenty-six registered units and fifteen *mandirs* of *Arya Samaj* as of 2016. They are also running an *Arya Benevolent Home* since May 1, 1921.

Suriname (formerly Dutch Guiana). First *girmit* arrivals – June 5, 1873.

Girmitiyas were taken to Suriname until 1910, the same year *Bhai Parmanand* arrived in Guyana. He contacted *Pauraanic Pandit Kunjbihari Tripathi* of Nickerie (across the river from Guyana). *Pandit Kunjbihari* was so impressed by his lectures that he became a follower of *Vedic Dharma*. Others who came into contact with *Bhai Parmanand* were also impressed by the teachings of *Rishi Dayananda* and started the propagation of *Arya Samaj.*

Gradually Vedic literature was brought from India including *Sathyaarth Prakaash* which first arrived in 1920. *Shuddhi sanskaars* were done and *Pandits Sheuratan & Sukhram Hindori* were involved with *shaastraarthas.* Suriname benefitted immensely from the visits of several Arya scholars and *sannyaasis.* They included *Pt. Mehta Jaimini* (1929), *Pt.Hariprasad* (1932), *Pt. Ayodhya Prasad* (1934), *Pt. Satyacharan Shastri* (1935), *Prof. Bhaskaranand* (1936), *Pt. Shrutikant* (1936), *Pt.Narain Dutt* (1938*), Prof. Ram Sahai* (1946), *Pt. Premanand* (1948), *Pt. Rishi Ram* ((1954), *Pt. Usharbudh* (1957), *Mahatma Anand Swami* (1969), *Pt. Shrutishil Sharma* (1972), *Swami Jagdishwaranand* (1975), *Pandit Prakashvir Shastri* (1976), *Swami Satya Prakash* (1976) and *Pt. Shyam Sunder Snatak* (1979).

Teaching *Hindi* was a major activity and today it is the language of the masses. *Swami Dayanand Orphanage* was established on October 18, 1933. International Arya Mahasammelan was held on September 26-29, 2009.

Fiji Islands. First girmit arrivals May 14, 1879. *Arya Samaj* in Fiji was born out of the desire of the *girmitiyas* to sustain the religious, cultural and social heritage and provide a social platform for their upliftment. The inspiration to establish *Arya Samaj* was derived from the *Satyaarth Prakash* and it was founded on December 25, 1904 at Samabula. During the first three decades of the 20thcentury, *Arya Samaj* was the sole voice of the *girmitiyas* in Fiji. The movement was so powerful that in 1929 when girmitiyas elected their first representatives to the legislative council, two of three candidates elected were *Arya Samajis*.

The Christians were busy convincing the military government that *Arya Samaj* was a seditious organisation, working against the government in the garb of religion. As a result the followers of *Arya Samaj* were challenged, their homes searched and their documents and books confiscated. Not finding anything against the government in the seized papers, they were later returned.

Swami Ram Manoharanand was the first missionary to arrive in 1913 from Burma. He was elected the first President of *Arya Pratinidhi Sabha* when it was established in 1918. The same year the *Gurukula Primary School* was started in Lautoka with much emphasis on Hindi. *Pandit Gopendra Narayan Pathik* arrived in August 1925 from Etawah, India and gave new impetus to the work of *Arya Samaj*. *Pandit Amichandra Vidyalankar* arrived on December 22, 1927 from India and joined *Pandit Pathik* at the *Gurukul*. *Pandit Thakur Kundan Singh Kush* arrived in 1928 from India and was employed as a teacher. *Mehta Jaimini* arrived in April 1928 and delivered lectures at thirty-five places. Sometimes *shaastraarthas* were held with Muslims and Christians and *Arya Samaj* thus resisted the conversion of Hindus to Islam and Christianity. Consequently, *shuddhi* was carried out.

Arya Samaj has established and manages fifteen preschools, nineteen primary schools and seven secondary colleges. It established a Vedic Training Centre in 2003 where *Purohits* are trained. It also has an *Arya Baal Ashram* since 2006. In addition, the *Sabha* has a University. Many *Arya Samajis* have now immigrated to Australia, New Zealand, United Kingdom, Canada and United States of America due to political conditions. ***To be Continue.....***

पृष्ठ 3 का शेष

अंधविश्वास : व्यक्ति, परिवार, समाज और ....

बाहर निकलें और समाज को भी निकालने की जिम्मेदारी ले।

(1) सबसे पहले बुद्धि और तर्क शक्ति का प्रयोग करें क्योंकि आपके सवाल और आपके तर्क न जाने कितने बंगाली बाबाओं की पोल खोल सकते हैं, न जाने कितनी जिन्दगी बचा सकते हैं और समाज को नया सन्देश दे सकते हैं।

(2) अगर कोई आपसे कहता है कि इन अंधविश्वासों में सच्चाई है, तब आप उससे कहिए कि वह इन अंधविश्वासों की सच्चाई को साबित करके दिखाए। अंधविश्वास से सम्बन्धित विश्वास को छुड़ाना बहुत मुश्किल होता है, यह एक कड़वी सच्चाई है। अंधविश्वास से बचने के लिए हमेशा सकारात्मक बने रहें। मानव मस्तिष्क, विश्वास एवं घटना के बीच बहुत जल्दी सम्बन्ध बना लेता है। अगर कोई व्यक्ति तेरह तारीख के दिन शुक्रवार को खतरनाक मानता है एवं उसी दिन उसके साथ कोई अनहोनी हो जाती है, तब अंधविश्वास मजबूती के साथ और प्रबल हो जाता है। ऐसा ही अन्य अंधविश्वासों के साथ भी होता है, जबकि यह मात्र एक संयोग ही है।

(3) अपने अंधविश्वास से सम्बन्धित विश्वास को करने की प्रबल इच्छा को नजर अंदाज करना सीखें। आपको पता होना चाहिए कि अंधविश्वास केवल तब कार्य करता है, जब आप उसके निहित आकर्षण एवं शक्ति में विश्वास करते हैं।

अगर बाबाओं को यह एहसास हो जाए कि आप शिक्षित या बुद्धिमान हैं तो वे आपसे घबरा कर दूरी बनाने का प्रयास करेंगे। उन्हें इस बात का डर सताने लगेगा कि कहीं आप उनके बने-बनाए नकली साम्राज्य का भंडाफोड़ न कर दें, जिससे उनकी सारी लोकप्रियता और प्रभाव कहीं एक झटके में मिट्टी में न मिल जायें और मासूम लोगों की जेबों का वजन हल्का करने का उनका प्रयास धरा-का-धरा न रह जाए।

आपके सक्रिय होने पर बंगाली बाबाओं, और ऐसे ही अधविश्वास के लाखों दुकानदारों के चंगुल से न जाने हर वर्ष कितनी महिलाएं-पुरुष आजाद होंगे, आप अनुमान नहीं लगा सकते। आस्था, धार्मिकता, अध्यात्मिकता, धर्म से परिवार जुड़ा रहे, इसके आप साप्ताहिक यज्ञ या मासिक यज्ञ करा सकते हैं उसमें अपने पूरे परिवार को बैठाइए, शांत मन से आहुति दीजिये, ईश्वर और आपके बीच एक अनूठा सम्बन्ध भी बनेगा और आपका परिवार तमाम अंधविश्वासों, ढकोसलों से बचा भी रहेगा। अंतिम लाइन जरूर याद रखें 'अपने परिवार और समाज के अगले मार्गदर्शक आप स्वयं हैं जैसा मार्गदर्शन करेंगे, कल वैसा ही आपका परिवार भी होगा।'

चिन्तन—वास्तव में अंधविश्वासों का ये खेल-खेला जाता है आस्था के नाम पर, और अब ये कार्पोरेट इंडस्ट्री की तरह बन चुका है। आपकी चूक आपकी आस्था, आपकी समस्या किसी की इंडस्ट्री या आस्था के कारोबार के साम्राज्य को बढ़ाने में बहुत बड़ा अनूठा साधन बन चुकी है। जिनका किसी भी कारण काम हो गया वो अपने कर्म के नहीं, बाबा के ढोल पीटता है। उसके अंधविश्वास पर अन्य लोग भी विश्वास करते हैं और अंधविश्वास अपने आप आगे बढ़ने लगता है। दूसरा जिनका काम नहीं होता, वह दूसरे बाबा की खोज करता है। नतीजा इन अंधविश्वासों में पड़ा व्यक्ति अपनी मेहनत का सारा श्रेय बाबाओं को देने लगता है। जबकि जो इंसान वेद एवं गीता के कर्मफल के सिद्धान्त को जान लेता है, वह हमेशा जीवन के हर एक क्षेत्र में यश और उन्नति प्राप्त करता है।

कुछ जाने-माने अंधविश्वास के अड्डे कहें या दुकानें वे हमारे आस-पास ही हैं, जैसे—मटके वाला पीर, ताले वाला पीर, चूड़ी वाला पीर, भैरों को शराब का प्रसाद, मुर्गे की बलि, काला जादू, पीर पर चढ़ाई गयी चादर, शनि और मंगल का कुंडली में प्रवेश, ज्योतिष, भाग्यफल, ताबीज-गंडा पहनना और भी न जाने कितने अंधविश्वास प्रचलित हैं, पर इनकी पूरी सूचि बनाना आज किसी की भी सीमा से बाहर है।

समाधान—वास्तव में इसका एक अकेला समाधान है परमपिता परमात्मा द्वारा बनाई गयी कर्मफल व्यवस्था पर पूर्ण विश्वास होना, यानि ये विश्वास होना कि हम जो भी कर्म करेंगे उसका फल निश्चित ही परमात्मा देंगे, चाहें कुछ भी, कोई मनुष्य इससे बच नहीं सकता। न कोई बाबा बचा सकता है, न कोई पीर, न मजार, न नदी। यानि परमात्मा की व्यवस्था से कोई नहीं बच सकता, चाहें पुजारी हो, बाबा हो या ओझा या पीर-फकीर, अगर बचते, तो न जाने आज कितने बाबा खुद जेल में सजा काट रहे हैं, क्या वो कभी जेल जाते?

जो मनुष्य इस बात को समझ गया, वह किसी भी अंधविश्वास की ओर नहीं बढ़ेगा, उसे साफ़ दिखने लगेगा कि यह सब बाजार है, डराकर लूटने की दुकानदारी है। यह लोग आपको लगातार डराकर रखना चाहते हैं, ताकि आप हमेशा उनसे सलाह लेते रहें और आप जीवनभर उनके गुलाम बने रहें। अत: पुन: सोचें।

घर पर बच्चों के साथ अंधविश्वास पर चर्चा करें, उन्हें बतायें कि अंधविश्वास के कारण कितने परिवार बर्बाद हो गये। बाकि इस लेख के नीचे लिंक है जो अंधविश्वास से तबाह परिवारों और समाज की सच्ची घटनाओं का संकलन है, आप उन्हें पढ़े अपने परिवार एवं सोशल मीडिया पर भी शेयर करें। हम सब मिलकर देश के बहुत परिवारों को बचा सकते हैं और धर्म के नाम, आस्था के नाम पर जो घृणित कार्य लगातार हो रहे हैं, उन पर रोक लगा सकते हैं। शायद यह एक बहुत पवित्र कार्य होगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हमें जगाया था, झकझोरा था, वो न झकझोरते तो शायद ये लेख भी आपके पास तक न पहुँच पाता। धन्य है दयानन्द...।

आइये, अपनी सोच में परिवर्तन लाएं और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाए स्वयं बचें और दूसरों को भी बचाएं, अंधविश्वास भगाएं, धर्म बचाएं।

साभार : चुनौतियों का चिन्तन

पृष्ठ 2 का शेष

जल संघर्ष : क्या अब ये ही भविष्य ....

इज़राइल और फिलिस्तीन, मोज़ाम्बिक और ज़िम्बाब्वे, बोलीविया और चिली के बीच, और तुर्की, सीरिया और इराक के बीच सीरिया में, असल विवाद तेल से अधिक अब नदियों और जल संसाधनों पर कब्जे को लेकर बदल चुके है। वाटर वार जल युद्ध का यह महज अभी एक ट्रेलर है, जैसे-जैसे आबादी बढ़ेगी पानी की मांग बढ़ेगी ऐसे-ऐसे यह जंग गली, मोहल्लों और सोसाइटियों से निकलकर राज्यों और देशों तक की जंग में तब्दील हो जाएगी। अब कार्रवाई का समय आ गया है, याद रखिये हमारे ग्रह का भविष्य सिर्फ पानी पर निर्भर है। हमें पानी को बचाना होगा, जल का सदुपयोग करना होगा। भूजल स्तर के नीचे जाने से देश के अलग-अलग हिस्सों से धरती फटने की लगातार घटनाएं घट रही हैं और ये हमारे प्रकृति दोहन का एक हिस्सा है। आजादी के बाद कई सौ बरस पुराने बांध तोड़ दिये गये, इनसे कई सौ बीघा जमीनों को सींचा जाता था, बांधों को तोड़कर उनको आवास के लिए उपयोग में लिया गया जिससे बारिश का पानी उपयोग में ना लिया जाकर नालों में पूरी तरह व्यर्थ बह जाता है तथा जंगलों की कटाई लगातार की जा रही है, जिससे बारिश का समय चक्र पूरी से बिगड़ गया है। हमें आज ही पानी का सदुपयोग करते हुये उसके बचत की शुरूआत अपने घर से ही करनी होगी। यह सुनिश्चित करना होगा कि पानी की बर्बादी ना हो तथा अपने आस-पास के लोगों को समझाना होगा कि पानी की बर्बादी ना करें। तभी हम अगली पीढ़ी को दो घूंट पानी दे पाएंगे अगर ना किया तो एक जंग देकर जायेंगे सोचना आज ही होगा। - ***सम्पादक***

पृष्ठ 4-5 का शेष

उत्तर - वेद उतने ही पुराने हैं जितना कि मानव जीवन। एक अरब 96 करोड़ से ज्यादा वर्ष सृष्टि की उत्पत्ति को हो गये हैं और इतना ही समय वेदों को हो गया है। वेदों में कभी कोई परिवर्तन नहीं आया, वेद जैसे तब थे, वैसे ही अब हैं और वैसे ही आगे भी रहेंगे। वेद ईश्वर की अमृतवाणी है इसमें एक शब्द की मिलावट भी नहीं हुई। वेद सत्य के प्रकाश करने वाले हैं, जैसे ईश्वर सत्य है, वैसे ही उसकी अमृत वाणी वेद भी सत्य हैं। मनुष्य द्वारा रचित ग्रंथों में तो मिलावट हो सकती है लेकिन वेदों में नहीं। जैसे दो और दो चार होते हैं, होते थे और होते रहेंगे। 10, 20, 50 साल के बाद ऐसा नहीं होगा कि दो और दो जोड़ने पर वे सवा चार हो जाएं, तब भी दो और दो चार ही होंगे। वैसे ही वेद भी सदा जैसे थे, वैसे ही हैं और वैसे ही रहेंगे। सत्य में कोई परिवर्तन नहीं होता। इसलिए वेद को 5000 साल या 10000 साल पुराना कहना ठीक नहीं है।

जैसा आप कह रहे हैं कि वेद में कभी परिवर्तन नहीं हुआ और न होगा, तो क्या बाबाओं ने वेद में परिवर्तन किया है?

उत्तर -यह तो आप समझ ही गए हैं कि वेद अपरिवर्तनशील हैं। वेदों को कोई बाबा भी परिवर्तित नहीं कर सकता। हां इतना जरूर है कि कुछ लोगों ने समय-समय पर वेदों की व्याख्या अपने ढंग से करने की नाकाम कोशिश की है। उन लोगों ने वेदों के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने की परंपरा भी बंद करवा दी थी। उन लोगों का कहना था कि महिलाएं भी वेद नहीं पढ़ सकती और भी कई वर्गों को कहा कि आप भी वेद नहीं पढ़ सकते, हम जो कहेंगे, वही मानो, वही सत्य है, हम वेद पढ़कर तुम्हें समझाएंगे और जो हम समझाएं, बताएं, वही करते जाओ, इस तरह से उन्होंने वेदों की अपने मनमाने ढंग से व्याख्या की, जिसके परिणामस्वरूप वेदों की व्याख्या के रूप में जो आप कह रहे हैं वह परिवर्तन की बात सामने आई।

जब लोगों ने संस्कृत और व्याकरण पढ़ना बंद कर दिया और संस्कृत नहीं आएगी तो फिर वेद कैसे पढेंगे। और इस तरह से हम वेद ज्ञान से दूर होते गए। लेकिन यहां पर यह अवश्य समझें कि संसार में ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका समाधन वेद में ना हो। इसलिए वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना प्रत्येक मनुष्य का परम धर्म है। वर्तमान में जो समस्याएं विश्व स्तर पर दिखाई दे रही हैं, उनमें चाहे पर्यावरण की समस्या हो या ग्लोबल वार्मिंग की समस्या हो, अधिक वर्षा, अधिक गर्मी, सर्दी या अधिक बीमारियां, महामारी या फिर उन्नति प्रगति का रास्ता हो, सब कुछ ज्ञान वेद में समाया हुआ है। इसलिए वेद के रास्ते पर चलने के लिए प्रत्येक मनुष्य को प्रयास करते रहना चाहिए।

महात्मा बुद्ध जब युवा थे तो उन्होंने देखा कि कुछ लोग भेड़-बकरियों को लेकर जा रहे हैं। उन्होंने पूछा इन्हें तुम कहां लेकर जा रहे हो, उन लोगों ने कहा कि इनको हवन में बलि देने के लिए जा रहे हैं। बुद्ध ने पूछा ऐसा कहां पर लिखा है? तो लोगों ने कहा कि वेद में लिखा है। इस पर बुद्ध ने कहा था कि अगर वेद में ऐसा कहा गया है तो मैं वेदों को ही नहीं मानता। इस तरह से लोग वेदों से दूर होते गए और जो हमारा ज्ञान-विज्ञान था, उससे भी कटते चले गए। महर्षि दयानंद सरस्वती ने आकर बताया कि संपूर्ण मानव जाति को उन्नति प्रगति और सफलता अगर किसी माध्यम से प्राप्त हो सकती है तो उसका परम आधार केवल और केवल वेद ही हैं। वेद का जो सही अर्थ है वह महर्षि दयानंद ने संसार को बताया और कहा कि अगर सुख, शांति, समृद्धि और आनंद चाहते हो तो वेदों की ओर लौटो। जितना भी मैथ, साइंस और भाषाएं आदि जो कुछ भी आप संसार में दे रहे हैं, सब वेदों पर आधारित है और इसलिए भारत विश्व गुरु था, क्योंकि यहां पर वेदों का अमृत ज्ञान था। -**संपादक**

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 20 मई, 2024 से रविवार 26 मई, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 23-24-25/05/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 22 मई, 2024

ओ३म्

वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प

इच्छुक युवा अपना विस्तृत आवेदन पत्र निम्न अनुसार भेजें

दिल्ली एवं देश-विदेश में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार हेतु प्रचारकों की आवश्यकता

वांछित योग्यताएँ

- युवा जिनकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो
- आर्य समाज के प्रचार प्रसार की हार्दिक इच्छा रखता हो
- यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में सक्षम हो
- गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ आधुनिक विषयों की भी शिक्षा प्राप्त की हो
- आर्य वीर दल से प्रशिक्षित युवाओं को वरीयता दी जाएगी

चयनित अभ्यर्थी को भाषा, ज्ञान, अनुभव व निपुणता के आधार पर उपयुक्त स्थानों पर नियुक्ति की जाएगी। सम्मानित मानदेय के अतिरिक्त वाहन व्यय, मोबाइल व्यय, व आवश्यकता होने पर आवास की सुविधा दी जाएगी।

आवेदन भेजने की अंतिम तिथि 30 मई 2024

लिखित, मौखिक परीक्षा एवं साक्षात्कार 5-6 जुलाई 2024

1 अगस्त से 30 सितम्बर तक आवासीय प्रशिक्षण

अपना स्वविवरण निम्न पते पर भेजें
(नाम, पता, फोन नं, अध्ययन, योग्यता, अनुभव)

डाक : संयोजक, वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प,
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
संपर्क सूत्र: 9650183335, 9990232164
E-mail: aryasabha@yahoo.com

प्रतिष्ठा में,

आर्य परिवारों के विवाह योग्य सदस्यों के लिए मनपसन्द जीवनसाथी खोजने की ऑनलाइन सुविधा

Arya Samaj Matrimony

matrimony.thearyasamaj.org 7428894012

देश-धर्म के समक्ष खड़ी असली चुनौतियों के विरुद्ध

आर्य समाज का शँखनाद

अपने और भावी पीढ़ी के भविष्य को बचाने के लिए इन 6 पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

vedicprakashan.com 95400 40339

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ — **सत्यार्थ प्रकाश** — सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण
(अजिल्द) 23x36%16
मुद्रित मूल्य ₹60 प्रचारार्थ मूल्य ₹40

विशेष संस्करण
(सजिल्द) 23x36%16
मुद्रित मूल्य ₹100 प्रचारार्थ मूल्य ₹60

पॉकेट संस्करण
मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹50

विशिष्ट पॉकेट संस्करण
मुद्रित मूल्य ₹150 प्रचारार्थ मूल्य ₹100

स्थूलाक्षर
(सजिल्द) 20x30%8
मुद्रित मूल्य ₹200 प्रचारार्थ मूल्य ₹120

उपहार संस्करण
मुद्रित मूल्य ₹1100 प्रचारार्थ मूल्य ₹750

सत्यार्थ प्रकाश
अंग्रेजी अजिल्द
250
160

सत्यार्थ प्रकाश
अंग्रेजी सजिल्द
300
200

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

ENHANCING TECHNOLOGY
EMPOWERING PEOPLE
ENABLING INNOVATION

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह